THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.10

दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण और पर्यावरणीय समस्याएँ: एक भौगोलिक मूल्यांकन

जितेन्द्र कुमार वर्मा[1], डॉ. शारदा[2]

[1]शोधार्थी, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

[2]शोध निर्देशक, सहायक आचार्य, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

सारांश

दौसा शहर में तीव्र गति से हो रहे अनियोजित शहरीकरण ने नगर के भौगोलिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य दौसा शहर में अनियोजित नगरीय विस्तार के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का भौगोलिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन करना है। अध्ययन में भूमि उपयोग परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि, अवसंरचनात्मक दबाव, यातायात विस्तार तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन का विश्लेषण किया गया है। शोध में द्वितीयक आँकड़ों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आँकड़ों तथा क्षेत्रीय अवलोकन विधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अनियोजित शहरी विकास के कारण शहर में जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या, हरित क्षेत्रों में कमी तथा भूजल स्तर में गिरावट जैसी गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। इसके अतिरिक्त, अनियमित आवासीय विस्तार एवं अपर्याप्त नगर नियोजन ने यातायात जाम, जल निकासी अवरोध तथा शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव जैसी समस्याओं को भी बढ़ावा दिया है। भौगोलिक विश्लेषण से यह तथ्य सामने आता है कि यदि सतत एवं नियोजित शहरी विकास नीतियों को प्रभावी रूप से लागू नहीं किया गया, तो भविष्य में पर्यावरणीय संकट और अधिक गंभीर हो सकता है। यह शोध दौसा शहर के सतत शहरी विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा प्रभावी नगरीय नियोजन हेतु उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है। अध्ययन स्थानीय प्रशासन, नगर नियोजकों एवं शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री के रूप में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द— अनियोजित शहरीकरण, पर्यावरणीय समस्याएँ, भौगोलिक मूल्यांकन, सतत विकास, भूमि उपयोग परिवर्तन, नगरीय विस्तार, प्रदूषण, दौसा शहर, भूजल संकट, नगर नियोजन।

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास क्रम में नगरीकरण एक अनिवार्य एवं सतत प्रक्रिया के रूप में उभरकर सामने आया है। औद्योगिकीकरण, परिवहन एवं संचार के साधनों का विस्तार, रोजगार के अवसरों की वृद्धि तथा आधुनिक जीवन शैली की आकांक्षाओं ने विश्वभर में नगरों के विकास को तीव्र गति प्रदान की है। विशेष रूप से विकासशील देशों में नगरीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र एवं असंतुलित रूप में परिलक्षित होती है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। भारत भी इस वैश्विक प्रवृत्ति से अछूता नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में नगरीय

जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हुई है तथा छोटे एवं मध्यम आकार के नगरों का विस्तार तीव्र गति से हुआ है। किंतु यह विकास अधिकांशतः योजनाबद्ध न होकर अव्यवस्थित एवं असंतुलित रहा है, जिसके कारण पर्यावरणीय संसाधनों पर अत्यधिक दबाव उत्पन्न हुआ है (मिश्र, 2018)।

भारतीय नगरों में बढ़ती जनसंख्या, ग्रामीण क्षेत्रों से होने वाला पलायन, आवासीय आवश्यकताओं में वृद्धि तथा आर्थिक गतिविधियों के केंद्रीकरण ने नगरीय क्षेत्रों के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। राजस्थान जैसे अर्ध-शुष्क प्रदेश में यह स्थिति और अधिक गंभीर दिखाई देती है, जहाँ सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते शहरी दबाव ने पर्यावरणीय असंतुलन को तीव्र किया है। राज्य के अनेक नगरों में अनियोजित विस्तार, अवैध बस्तियों का विकास, जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की अपर्याप्त व्यवस्था जैसी समस्याएँ सामान्य रूप से दृष्टिगोचर होती हैं (शर्मा एवं सिंह, 2020)। राजस्थान के उभरते नगरों में दौसा शहर एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय केंद्र के रूप में विकसित हुआ है, जहाँ विगत कुछ दशकों में नगरीकरण की प्रक्रिया अत्यधिक तीव्र हुई है। दौसा शहर भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण नगरीय केंद्र है, जो प्रशासनिक, व्यापारिक एवं परिवहन संबंधी गतिविधियों के कारण निरंतर विस्तार प्राप्त कर रहा है। राष्ट्रीय राजमार्गों एवं क्षेत्रीय संपर्क मार्गों से जुड़ाव ने इस नगर के आर्थिक महत्व को बढ़ाया है, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीय विस्तार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। किंतु नगर के इस तीव्र विस्तार के साथ समुचित नगर नियोजन एवं पर्यावरणीय प्रबंधन की प्रभावी व्यवस्था विकसित नहीं हो सकी। फलस्वरूप अनियमित निर्माण, हरित क्षेत्रों में कमी, जल निकासी अवरोध, यातायात दबाव तथा प्रदूषण जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। यह स्थिति न केवल नगर के पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित कर रही है, बल्कि मानव स्वास्थ्य एवं जीवन गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है (जैन, 2019)।

अनियोजित शहरीकरण की प्रक्रिया मूलतः उस स्थिति को अभिव्यक्त करती है, जिसमें नगरीय विकास बिना दीर्घकालिक योजना, संसाधन प्रबंधन एवं पर्यावरणीय संतुलन के होता है। जब किसी नगर का भौतिक विस्तार उसकी आधारभूत संरचनाओं, सार्वजनिक सुविधाओं एवं प्राकृतिक संसाधनों की वहन क्षमता से अधिक हो जाता है, तब विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। दौसा शहर में भी यही स्थिति परिलक्षित होती है, जहाँ आवासीय कॉलोनियों का अनियंत्रित विकास, कृषि भूमि का गैर-कृषि उपयोग में परिवर्तन तथा भूजल संसाधनों का अत्यधिक दोहन गंभीर चिंता का विषय बन चुका है। इसके अतिरिक्त बढ़ते वाहनों एवं औद्योगिक गतिविधियों ने वायु एवं ध्वनि प्रदूषण की समस्या को और अधिक गंभीर बना दिया है (भारत सरकार, 2021)। वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट वैश्विक विमर्श का प्रमुख विषय बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता में कमी, जल संकट तथा प्रदूषण जैसी समस्याएँ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अनियोजित नगरीकरण से जुड़ी हुई हैं। इस संदर्भ में छोटे एवं मध्यम आकार के नगरों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि इन नगरों में नगरीकरण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत तीव्र होने के बावजूद योजनागत हस्तक्षेप सीमित दिखाई देते हैं। दौसा शहर का अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह एक उभरता हुआ नगर है, जहाँ विकास एवं पर्यावरण के मध्य संतुलन स्थापित करना वर्तमान समय की प्रमुख आवश्यकता बन चुका है।

2. अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय

दौसा शहर राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण नगरीय एवं प्रशासनिक केंद्र है, जो जयपुर संभाग के अंतर्गत आता है। यह नगर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रभाव क्षेत्र में स्थित होने के कारण विगत कुछ दशकों में तीव्र नगरीय विकास का अनुभव कर रहा है। भौगोलिक दृष्टि से दौसा लगभग 26° 53’ उत्तरी अक्षांश एवं 76° 20’ पूर्वी देशांतर के मध्य अवस्थित है। यह नगर समुद्र तल से लगभग 333 मीटर की औसत ऊँचाई पर स्थित है तथा अरावली पर्वतमाला के पूर्वी मैदानी भाग का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी स्थिति जयपुर एवं आगरा जैसे प्रमुख शहरी केंद्रों के मध्य होने के कारण व्यापारिक एवं परिवहन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है (राजस्थान आर्थिक समीक्षा, 2023)।

दौसा जिले का भौतिक स्वरूप मुख्यतः अर्ध-शुष्क मैदानी क्षेत्र का उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ की स्थलाकृति अपेक्षाकृत समतल है, किंतु कुछ स्थानों पर निम्न पहाड़ियाँ एवं चट्टानी भू-आकृतियाँ भी देखने को मिलती हैं। नगर के आसपास का क्षेत्र कृषि प्रधान रहा है, जहाँ पूर्व में वर्षा आधारित

कृषि प्रणाली प्रमुख थी। किंतु तीव्र शहरी विस्तार एवं भूमि उपयोग परिवर्तन के कारण कृषि भूमि का एक बड़ा भाग आवासीय एवं व्यावसायिक उपयोग में परिवर्तित हो चुका है। इस प्रकार की भूमि परिवर्तन प्रक्रिया ने प्राकृतिक सतह संरचना एवं स्थानीय पारिस्थितिकी को प्रभावित किया है (शर्मा, 2019)। दौसा की जलवायु अर्ध-शुष्क प्रकार की है, जिसमें ग्रीष्म ऋतु अत्यधिक उष्ण एवं शीत ऋतु अपेक्षाकृत शुष्क एवं ठंडी होती है। ग्रीष्मकाल में तापमान कई बार 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जबकि शीतकाल में तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। औसत वार्षिक वर्षा लगभग 600 से 700 मिलीमीटर के मध्य रहती है, जो मुख्यतः दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त होती है। वर्षा की अनिश्चितता एवं असमान वितरण के कारण जल संसाधनों पर निरंतर दबाव बना रहता है। वर्तमान समय में बढ़ते शहरीकरण एवं भूजल दोहन ने जल संकट की समस्या को और अधिक गंभीर बना दिया है (भारत मौसम विज्ञान विभाग, 2022)।

दौसा शहर की जनसंख्या संरचना में भी विगत दशकों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। जनगणना के आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि नगर की जनसंख्या वृद्धि दर राज्य के अनेक मध्यम आकार के नगरों की तुलना में अधिक रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार, शिक्षा एवं बेहतर जीवन सुविधाओं की तलाश में होने वाला प्रवास नगर की जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ नगर में आवासीय दबाव, आधारभूत सुविधाओं की माँग तथा सार्वजनिक सेवाओं पर भार निरंतर बढ़ता गया है। इससे अनियोजित बस्तियों, अवैध निर्माणों एवं अपर्याप्त नागरिक सुविधाओं की समस्या उत्पन्न हुई है (भारत की जनगणना, 2011)।

आर्थिक दृष्टि से दौसा शहर एक उभरता हुआ व्यापारिक एवं सेवा केंद्र है। यहाँ कृषि उपज व्यापार, लघु उद्योग, निर्माण गतिविधियाँ, परिवहन सेवाएँ तथा खुदरा बाजार प्रमुख आर्थिक गतिविधियों के रूप में विकसित हुए हैं। जयपुर के निकट होने के कारण दौसा का आर्थिक महत्व और अधिक बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार भी शहरीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित कर रहा है। किंतु आर्थिक गतिविधियों के तीव्र विस्तार के साथ पर्यावरणीय संसाधनों पर दबाव बढ़ा है, जिससे वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी समस्याएँ अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई हैं (जैन एवं अग्रवाल, 2021)।

दौसा का ऐतिहासिक विकास भी इसके वर्तमान नगरीय स्वरूप को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन एवं मध्यकालीन मार्गों से जुड़ाव के कारण यह क्षेत्र व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र रहा। स्वतंत्रता के पश्चात प्रशासनिक पुनर्गठन एवं परिवहन नेटवर्क के विस्तार ने दौसा के शहरी विकास को नई दिशा प्रदान की। विशेष रूप से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 21 एवं क्षेत्रीय सड़क संपर्कों के कारण नगर का क्षेत्रीय महत्व बढ़ा तथा नगरीय विस्तार में तीव्रता आई (सिंह, 2020)। परिवहन संपर्क की दृष्टि से दौसा शहर राजस्थान के प्रमुख नगरों से सड़क एवं रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। दिल्ली–मुंबई औद्योगिक प्रभाव क्षेत्र के समीप होने के कारण यहाँ परिवहन एवं व्यापारिक गतिविधियों में निरंतर वृद्धि हुई है। यह संपर्क व्यवस्था जहाँ आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर वाहनों की संख्या में वृद्धि, ध्वनि प्रदूषण एवं वायु गुणवत्ता में गिरावट जैसी समस्याओं को भी जन्म देती है। नगर के केंद्रीय भागों में यातायात दबाव एवं पार्किंग अव्यवस्था वर्तमान समय की प्रमुख नगरीय समस्याओं के रूप में उभरकर सामने आई हैं (राजस्थान नगर विकास प्रतिवेदन, 2022)।

दौसा की प्रशासनिक संरचना नगर परिषद व्यवस्था के अंतर्गत संचालित होती है। नगर प्रशासन पर बढ़ती जनसंख्या एवं शहरी विस्तार के कारण नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निरंतर दबाव बना हुआ है। जलापूर्ति, सीवरेज, सड़क निर्माण एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी आधारभूत सेवाओं का विस्तार नगरीकरण की गति की तुलना में अपेक्षाकृत धीमा रहा है। परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में पर्यावरणीय अव्यवस्था एवं असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हुई है। भौगोलिक परिस्थितियाँ किसी भी नगर के विकास एवं पर्यावरणीय स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। दौसा शहर में अर्ध-शुष्क जलवायु, सीमित जल संसाधन, बढ़ती जनसंख्या तथा अनियोजित भूमि उपयोग परिवर्तन ने पर्यावरणीय समस्याओं को और अधिक जटिल बना दिया है। हरित क्षेत्रों में निरंतर कमी, भूजल स्तर में गिरावट तथा प्राकृतिक जल निकासी मार्गों पर अतिक्रमण जैसी स्थितियाँ इस

बात का संकेत हैं कि नगर का विकास प्राकृतिक वहन क्षमता से अधिक तीव्र गति से हो रहा है। इस प्रकार दौसा शहर का भौगोलिक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यदि शहरी विकास को वैज्ञानिक एवं योजनाबद्ध आधार पर नियंत्रित नहीं किया गया, तो भविष्य में पर्यावरणीय संकट और अधिक गंभीर रूप धारण कर सकता है (यादव, 2021)।

3. अनियोजित शहरीकरण की प्रवृत्तियाँ एवं कारण

वर्तमान समय में शहरीकरण केवल जनसंख्या के नगरों की ओर स्थानांतरण की प्रक्रिया मात्र नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक परिवर्तनों का एक व्यापक स्वरूप ग्रहण कर चुका है। भारत के अनेक मध्यम एवं छोटे नगरों की भाँति दौसा शहर में भी विगत कुछ दशकों के दौरान तीव्र शहरी विस्तार परिलक्षित हुआ है। किंतु यह विस्तार अधिकांशतः योजनाबद्ध न होकर अनियंत्रित एवं असंतुलित स्वरूप में विकसित हुआ है। परिणामस्वरूप नगर की आधारभूत संरचना, पर्यावरणीय संतुलन तथा संसाधनों की वहन क्षमता पर गंभीर दबाव उत्पन्न हुआ है। दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण की प्रवृत्तियों को समझने के लिए उन सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक कारकों का विश्लेषण आवश्यक है, जिन्होंने इस प्रक्रिया को गति प्रदान की है। भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार अवसर, कृषि पर बढ़ती निर्भरता तथा जीवन स्तर में सुधार की आकांक्षा लोगों को नगरों की ओर आकर्षित करती है। दौसा शहर भी इसी प्रक्रिया का प्रमुख उदाहरण है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों से निरंतर जनसंख्या प्रवास हो रहा है। यह प्रवास मुख्यतः रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं व्यापारिक अवसरों की उपलब्धता के कारण बढ़ा है। जनसंख्या वृद्धि ने नगर के भौतिक विस्तार को तीव्र किया है, किंतु नगर नियोजन की अपर्याप्त व्यवस्था के कारण यह विस्तार अव्यवस्थित रूप में विकसित हुआ है (भारत की जनगणना, 2011)। दौसा शहर की जनसंख्या वृद्धि दर में तीव्र वृद्धि नगरीकरण की प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में दिखाई देती है। बढ़ती जनसंख्या के कारण आवासीय क्षेत्रों की माँग निरंतर बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप नगर के बाहरी भागों में नई कॉलोनियों एवं बस्तियों का विकास हुआ है। इनमें से अनेक कॉलोनियाँ बिना समुचित स्वीकृति एवं नियोजन के विकसित हुई हैं। सड़क, जल निकासी, सीवरेज एवं हरित क्षेत्र जैसी आधारभूत सुविधाओं के अभाव ने इन क्षेत्रों को पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील बना दिया है। इस प्रकार अनियोजित आवासीय विस्तार ने नगर के प्राकृतिक स्वरूप एवं संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है (शर्मा एवं गुप्ता, 2020)।

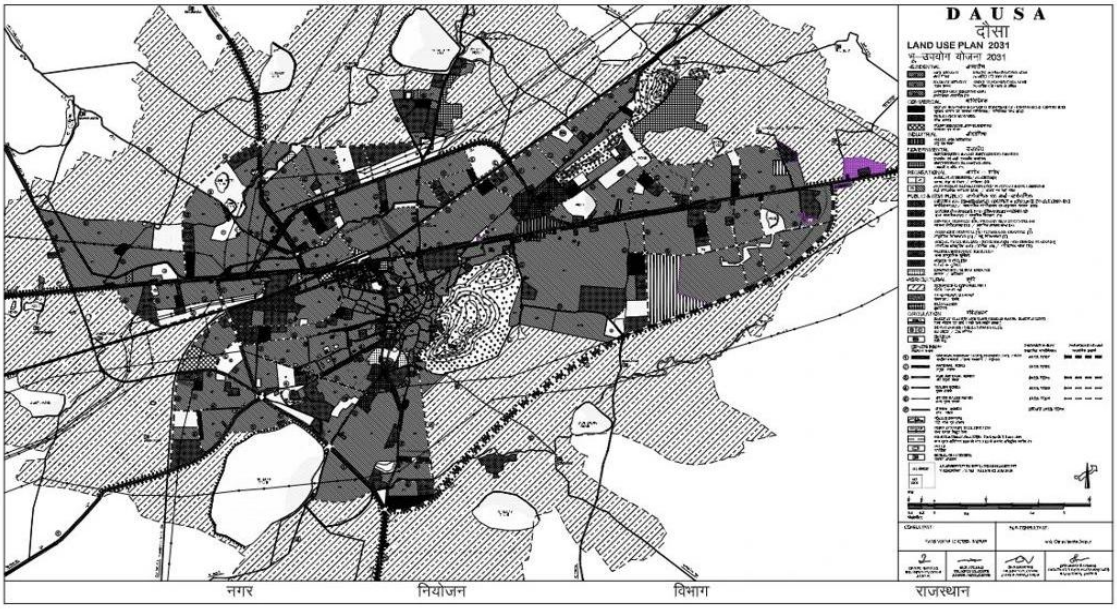

ग्रामीण-नगरीय प्रवास दौसा में शहरीकरण को बढ़ाने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग रोजगार एवं बेहतर जीवन सुविधाओं की तलाश में शहर की ओर आकर्षित हुए हैं। विशेष रूप से शिक्षा संस्थानों, निजी व्यवसायों एवं निर्माण कार्यों के विस्तार ने

असंगठित श्रमिक वर्ग को नगर की ओर आकर्षित किया है। किंतु नगर प्रशासन इस तीव्र जनसंख्या वृद्धि के अनुरूप आधारभूत संरचनाओं का विकास नहीं कर सका, जिसके कारण अवैध बस्तियों एवं अनौपचारिक आवासीय क्षेत्रों का विकास हुआ। इन क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल, सीवरेज एवं अपशिष्ट प्रबंधन जैसी सुविधाओं का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है (सिंह, 2019)।

दौसा शहर में औद्योगिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों का विस्तार भी शहरीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करने वाला एक प्रमुख कारण रहा है। यद्यपि यह नगर बड़े औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित नहीं हुआ है, फिर भी लघु उद्योगों, निर्माण गतिविधियों, परिवहन सेवाओं तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जयपुर के निकट स्थित होने तथा राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ाव के कारण यह क्षेत्र क्षेत्रीय व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरा है। आर्थिक गतिविधियों के इस विस्तार ने रोजगार के अवसरों को बढ़ाया, किंतु साथ ही पर्यावरणीय दबाव एवं संसाधनों के अत्यधिक उपयोग को भी बढ़ावा दिया (जैन, 2021)। अनियोजित शहरीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू भूमि उपयोग परिवर्तन है। दौसा शहर के आसपास के कृषि प्रधान क्षेत्रों में तेजी से भूमि का रूपांतरण होकर आवासीय एवं व्यावसायिक उपयोग बढ़ा है। कृषि भूमि का गैर-कृषि उपयोग में परिवर्तन न केवल खाद्य सुरक्षा एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, बल्कि पर्यावरणीय असंतुलन को भी जन्म देता है। हरित क्षेत्रों एवं खुले स्थानों में कमी के कारण स्थानीय तापमान में वृद्धि, जल पुनर्भरण की क्षमता में कमी तथा पारिस्थितिक संतुलन में अवनयन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं (यादव एवं मीणा, 2022)।

दौसा शहर में भूमि उपयोग परिवर्तन का संबंध अचल संपत्ति व्यवसाय एवं निजी निर्माण गतिविधियों से भी जुड़ा हुआ है। नगर के बाहरी क्षेत्रों में बिना वैज्ञानिक योजना के कॉलोनियों का विकास हुआ, जहाँ प्राकृतिक जल निकासी मार्गों एवं कृषि भूमि पर अतिक्रमण देखने को मिलता है। यह स्थिति वर्षा ऋतु में जलभराव एवं निकासी संकट को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त शहरी विस्तार के कारण वृक्षों की कटाई एवं प्राकृतिक वनस्पति में कमी आई है, जिससे पर्यावरणीय गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है (राजस्थान नगर विकास प्रतिवेदन, 2022)। अनियोजित शहरीकरण की समस्या का एक प्रमुख कारण प्रशासनिक योजनाओं एवं नीतिगत क्रियान्वयन की कमी भी है। नगर प्रशासन एवं विकास प्राधिकरणों द्वारा बनाए गए विकास योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन कई बार संभव नहीं हो पाता, जिसके कारण अवैध निर्माण एवं अतिक्रमण बढ़ते जाते हैं। दौसा शहर में भी बढ़ती जनसंख्या एवं तीव्र नगरीय विस्तार की तुलना में आधारभूत सेवाओं का विकास अपेक्षाकृत धीमा रहा है। सड़क नेटवर्क, सार्वजनिक परिवहन, जल आपूर्ति एवं अपशिष्ट प्रबंधन जैसी सुविधाओं पर अत्यधिक दबाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

अवसंरचनात्मक दबाव दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण की गंभीर परिणति के रूप में उभरकर सामने आया है। नगर की सड़कें बढ़ते यातायात भार को वहन करने में सक्षम नहीं हैं, जिसके कारण यातायात जाम एवं ध्वनि प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। जलापूर्ति व्यवस्था बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ दिखाई देती है, जिसके परिणामस्वरूप भूजल दोहन में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की अपर्याप्त व्यवस्था ने नगर की स्वच्छता एवं पर्यावरणीय गुणवत्ता को प्रभावित किया है (भारत सरकार, 2021)। दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण की प्रवृत्तियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि आर्थिक विकास एवं नगरीय विस्तार के मध्य संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। यदि शहरीकरण की प्रक्रिया वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से नियंत्रित नहीं की गई, तो भविष्य में संसाधनों की कमी, प्रदूषण, जल संकट एवं पर्यावरणीय अवनयन जैसी समस्याएँ और अधिक गंभीर हो सकती हैं। अतः नगर के समग्र एवं सतत विकास हेतु योजनाबद्ध शहरीकरण, भूमि उपयोग नियंत्रण तथा पर्यावरणीय संरक्षण नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है।

4. पर्यावरणीय समस्याओं का भौगोलिक मूल्यांकन

दौसा शहर में तीव्र एवं अनियोजित शहरीकरण ने पर्यावरणीय संरचना एवं प्राकृतिक संसाधनों पर व्यापक प्रभाव डाला है। नगरीकरण की प्रक्रिया जहाँ आर्थिक गतिविधियों एवं सामाजिक सुविधाओं के विस्तार को प्रोत्साहित करती है, वहीं दूसरी ओर यह पर्यावरणीय असंतुलन, संसाधनों के अत्यधिक

दोहन तथा प्रदूषण संबंधी समस्याओं को भी जन्म देती है। दौसा जैसे उभरते हुए मध्यम आकार के नगरों में यह स्थिति अधिक गंभीर रूप में दिखाई देती है, क्योंकि यहाँ नगरीय विस्तार की गति आधारभूत संरचनाओं एवं पर्यावरणीय प्रबंधन की क्षमता से अधिक तीव्र रही है। परिणामस्वरूप नगर का पारिस्थितिक संतुलन प्रभावित हुआ है तथा अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ स्थायी स्वरूप ग्रहण करती जा रही हैं। भौगोलिक दृष्टिकोण से इन समस्याओं का अध्ययन नगर के प्राकृतिक परिवेश, जनसंख्या दबाव, भूमि उपयोग परिवर्तन तथा संसाधनों की वहन क्षमता के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है (शर्मा, 2021)।

दौसा शहर में वायु प्रदूषण की समस्या पिछले कुछ वर्षों में तीव्र रूप से उभरकर सामने आई है। नगर में वाहनों की संख्या में निरंतर वृद्धि, सड़क निर्माण गतिविधियाँ, धूल कणों का प्रसार तथा व्यावसायिक गतिविधियों का विस्तार वायु गुणवत्ता को प्रभावित कर रहे हैं। विशेष रूप से नगर के केंद्रीय बाजार क्षेत्रों एवं राष्ट्रीय राजमार्ग के आसपास धूल एवं धुएँ की मात्रा अधिक पाई जाती है। यातायात दबाव के कारण वातावरण में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड तथा सूक्ष्म कणों की मात्रा बढ़ रही है, जो मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। श्वसन संबंधी रोग, एलर्जी एवं आँखों में जलन जैसी समस्याएँ नगरीय आबादी में अधिक देखने को मिल रही हैं (भारत प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, 2022)। वायु प्रदूषण की समस्या का संबंध नगर की भौगोलिक संरचना एवं जलवायु परिस्थितियों से भी जुड़ा हुआ है। दौसा अर्ध-शुष्क क्षेत्र में स्थित है, जहाँ वर्षा की मात्रा सीमित होने के कारण धूल कण वातावरण में लंबे समय तक बने रहते हैं। हरित क्षेत्रों में कमी एवं वृक्षों की कटाई ने भी वायु गुणवत्ता को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त संकरी सड़कों एवं अव्यवस्थित यातायात व्यवस्था के कारण वाहनों की गति धीमी रहती है, जिससे प्रदूषण स्तर और अधिक बढ़ जाता है (सिंह एवं यादव, 2020)।

जल प्रदूषण एवं जल निकासी की समस्या दौसा शहर की प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक है। नगर के अनेक क्षेत्रों में घरेलू अपशिष्ट जल एवं ठोस कचरे का उचित निस्तारण नहीं हो पाता, जिसके कारण नालों एवं जल स्रोतों का प्रदूषण बढ़ रहा है। सीवरेज व्यवस्था की अपर्याप्तता के कारण गंदा पानी खुले नालों एवं निम्न क्षेत्रों में एकत्रित हो जाता है, जिससे दुर्गंध एवं जलजनित रोगों का खतरा बढ़ता है। वर्षा ऋतु के दौरान जल निकासी अवरुद्ध होने के कारण कई क्षेत्रों में जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह समस्या मुख्यतः अनियोजित निर्माण, प्राकृतिक जल निकासी मार्गों पर अतिक्रमण तथा अपर्याप्त नगरीय नियोजन का परिणाम है (राजस्थान नगर विकास प्रतिवेदन, 2022)।

दौसा शहर में भूजल स्तर में गिरावट एक गंभीर पर्यावरणीय संकट के रूप में उभर रही है। नगर की बढ़ती जनसंख्या एवं जलापूर्ति व्यवस्था की सीमाओं के कारण भूजल पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ी है। घरेलू, व्यावसायिक एवं निर्माण कार्यों में भूजल का निरंतर दोहन किया जा रहा है, जबकि वर्षा जल संचयन एवं पुनर्भरण की प्रभावी व्यवस्था का अभाव दिखाई देता है। परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में जल स्तर निरंतर नीचे जा रहा है। भूजल स्तर में गिरावट का प्रभाव केवल जल उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे भूमि की नमी, कृषि गतिविधियों तथा स्थानीय पारिस्थितिकी पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है (केंद्रीय भूजल बोर्ड, 2021)।

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या भी दौसा शहर में तेजी से बढ़ती दिखाई देती है। जनसंख्या वृद्धि एवं उपभोग की बदलती प्रवृत्तियों के कारण नगर में प्रतिदिन बड़ी मात्रा में ठोस कचरा उत्पन्न हो रहा है। किंतु इसके वैज्ञानिक संग्रहण, पृथक्करण एवं निस्तारण की समुचित व्यवस्था विकसित नहीं हो सकी है। अनेक स्थानों पर खुले में कचरा फेंकने एवं जलाने की प्रवृत्ति देखी जाती है, जिससे वायु एवं भूमि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। प्लास्टिक एवं गैर-जैव अपघटित पदार्थों की बढ़ती मात्रा ने पर्यावरणीय संकट को और अधिक गंभीर बना दिया है। नगर के बाहरी क्षेत्रों में अनियंत्रित कचरा निस्तारण भूमि उपयोग एवं पर्यावरणीय गुणवत्ता दोनों को प्रभावित कर रहा है (जैन, 2020)।

हरित क्षेत्रों में कमी एवं जैव विविधता पर प्रभाव भी अनियोजित शहरीकरण की महत्वपूर्ण परिणति है। दौसा शहर के विस्तार के साथ वृक्षों, खुले मैदानों एवं प्राकृतिक वनस्पति क्षेत्रों में निरंतर कमी आई है। आवासीय एवं व्यावसायिक निर्माण कार्यों ने प्राकृतिक सतहों को कंक्रीट संरचनाओं में परिवर्तित

कर दिया है। परिणामस्वरूप स्थानीय तापमान में वृद्धि, जैव विविधता में कमी एवं पर्यावरणीय संतुलन में अवनयन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पक्षियों एवं छोटे जीवों के प्राकृतिक आवास प्रभावित हुए हैं तथा नगरीय पारिस्थितिकी में असंतुलन उत्पन्न हुआ है (मीणा एवं चौधरी, 2021)। ध्वनि प्रदूषण भी नगर के पर्यावरणीय संकट का एक प्रमुख पक्ष बन चुका है। बढ़ती वाहन संख्या, यातायात जाम, बाजार क्षेत्रों की भीड़ तथा निर्माण गतिविधियों के कारण ध्वनि स्तर में निरंतर वृद्धि हो रही है। विशेष रूप से मुख्य बाजार, बस स्टैंड एवं राजमार्ग के आसपास ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता अधिक देखी जाती है। यह समस्या मानव स्वास्थ्य पर मानसिक तनाव, अनिद्रा एवं श्रवण क्षमता में कमी जैसे प्रतिकूल प्रभाव डालती है (भारत सरकार, 2021)।

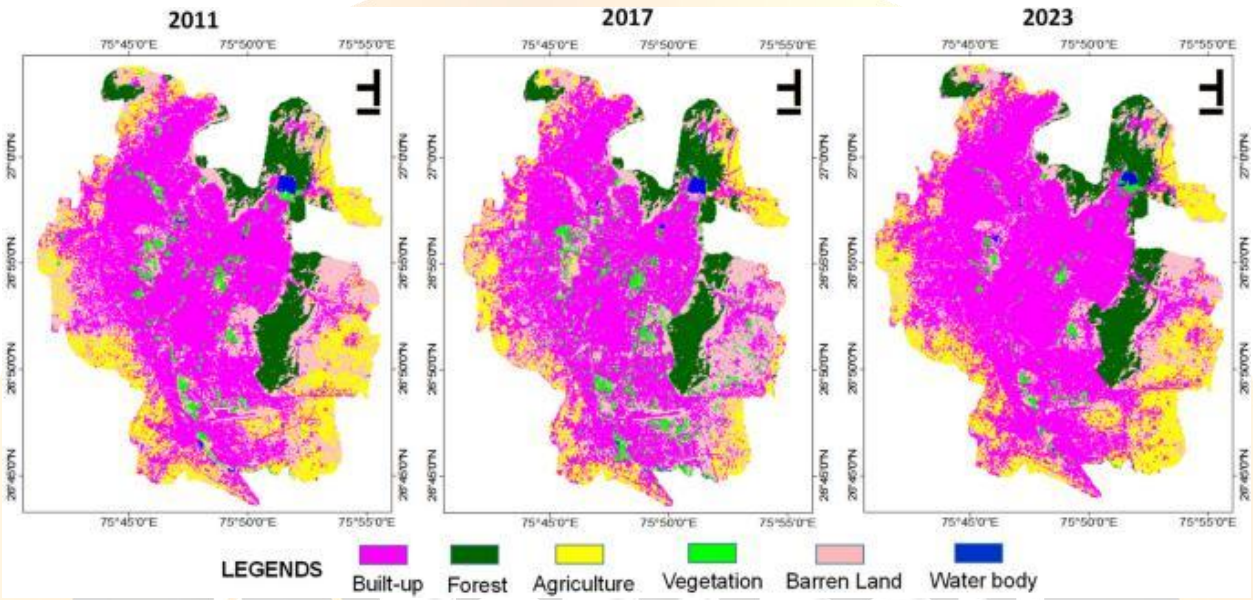

शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव वर्तमान समय में दौसा शहर की उभरती हुई पर्यावरणीय समस्या है। नगर के तीव्र कंक्रीटीकरण, हरित क्षेत्रों में कमी तथा वाहनों एवं निर्माण गतिविधियों की वृद्धि के कारण नगर का तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक हो गया है। यह प्रभाव विशेष रूप से ग्रीष्म ऋतु में अधिक स्पष्ट रूप से अनुभव किया जाता है। तापमान वृद्धि के कारण ऊर्जा की खपत, जल की माँग तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में वृद्धि होती है। भौगोलिक दृष्टि से यह स्थिति इस बात का संकेत है कि नगर का विकास प्राकृतिक वहन क्षमता एवं पारिस्थितिक संतुलन की उपेक्षा करते हुए हो रहा है (यादव, 2022)।

दौसा शहर की पर्यावरणीय समस्याओं का भौगोलिक मूल्यांकन यह स्पष्ट करता है कि अनियोजित शहरीकरण ने प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरणीय तंत्र पर बहुआयामी दबाव उत्पन्न किया है। भूमि उपयोग परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि, अवसंरचनात्मक दबाव तथा प्रशासनिक नियोजन की कमी ने इन समस्याओं को और अधिक जटिल बना दिया है। यदि समय रहते वैज्ञानिक नगर नियोजन, पर्यावरणीय संरक्षण एवं संसाधनों के सतत प्रबंधन की दिशा में प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में यह संकट और अधिक गंभीर स्वरूप ग्रहण कर सकता है। अतः दौसा शहर के संतुलित एवं सतत विकास हेतु पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर आधारित नगरीय नियोजन की आवश्यकता अत्यंत अनिवार्य हो गई है।

5. सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण के परिणामस्वरूप उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं ने केवल प्राकृतिक संसाधनों एवं पारिस्थितिक संतुलन को ही प्रभावित नहीं किया है, बल्कि इसके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर भी गहरे प्रभाव पड़े हैं। शहरीकरण की तीव्र गति ने जहाँ एक ओर आर्थिक गतिविधियों, व्यापार एवं सेवाक्षेत्र के विस्तार को प्रोत्साहित किया, वहीं दूसरी ओर संसाधनों के असमान वितरण, आधारभूत सुविधाओं पर बढ़ते दबाव तथा सामाजिक विषमताओं को भी बढ़ावा दिया है। पर्यावरणीय अवनयन एवं अव्यवस्थित नगरीय विस्तार का प्रभाव विशेष रूप से निम्न एवं

मध्यम आय वर्ग पर अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, क्योंकि ये वर्ग सीमित संसाधनों एवं अपर्याप्त नागरिक सुविधाओं पर निर्भर रहते हैं। इस प्रकार दौसा शहर का सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचा अनियोजित शहरीकरण के कारण निरंतर परिवर्तन एवं दबाव की स्थिति का सामना कर रहा है (शर्मा एवं यादव, 2021)।

अनियोजित शहरीकरण का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव जनस्वास्थ्य पर दिखाई देता है। नगर में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा ठोस अपशिष्टों के अनुचित निस्तारण ने अनेक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दिया है। बढ़ती वाहन संख्या एवं धूल कणों के कारण श्वसन संबंधी रोगों, एलर्जी, दमा एवं आँखों में संक्रमण जैसी समस्याओं में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार दूषित जल एवं अपर्याप्त जल निकासी व्यवस्था के कारण जलजनित रोगों का खतरा बढ़ा है। अनेक निम्न आय वर्गीय बस्तियों में स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता सुविधाओं के अभाव के कारण डेंगू, मलेरिया एवं जठरांत्र संबंधी रोग अधिक देखने को मिलते हैं। स्वास्थ्य संबंधी इन समस्याओं का प्रभाव केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इससे परिवार की आर्थिक स्थिति एवं कार्यक्षमता भी प्रभावित होती है (भारत सरकार, 2022)।

दौसा शहर में जीवन स्तर में गिरावट भी अनियोजित शहरीकरण का एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव है। बढ़ती जनसंख्या एवं अव्यवस्थित नगरीय विस्तार के कारण नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता प्रभावित हुई है। अनेक क्षेत्रों में सड़क, सीवरेज, स्वच्छ जल एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी आधारभूत सुविधाओं का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यातायात जाम, ध्वनि प्रदूषण एवं जलभराव जैसी समस्याएँ दैनिक जीवन को प्रभावित करती हैं। इससे नगरीय जीवन में असुविधा एवं मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। शहरी जीवन की बढ़ती प्रतिस्पर्धा एवं संसाधनों की कमी ने सामाजिक संबंधों एवं सामुदायिक जीवन शैली को भी प्रभावित किया है (जैन, 2020)।

जल संकट वर्तमान समय में दौसा शहर की गंभीर सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं में से एक बन चुका है। भूजल स्तर में गिरावट एवं बढ़ती जल माँग के कारण अनेक क्षेत्रों में जलापूर्ति की समस्या उत्पन्न हो रही है। निम्न आय वर्गीय क्षेत्रों में जल संकट की स्थिति और अधिक गंभीर दिखाई देती है, जहाँ लोगों को सीमित जल संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है। जल की उपलब्धता में असमानता सामाजिक असंतोष एवं संसाधन संघर्ष की स्थिति को जन्म देती है। इसके अतिरिक्त जल संकट के कारण घरेलू कार्यों, स्वच्छता व्यवस्था तथा छोटे व्यवसायों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है (केंद्रीय भूजल बोर्ड, 2021)। अनियोजित शहरीकरण ने सामाजिक असमानता एवं असंतुलित विकास को भी बढ़ावा दिया है। नगर के विकसित एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में आधुनिक सुविधाओं एवं अवसंरचनात्मक विकास की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि निम्न आय वर्गीय एवं बाहरी क्षेत्रों में नागरिक सुविधाओं की स्थिति कमजोर दिखाई देती है। यह असमानता आर्थिक अवसरों, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जीवन गुणवत्ता के स्तर पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। परिणामस्वरूप नगर में सामाजिक विभाजन एवं असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। अनौपचारिक बस्तियों एवं झुग्गी क्षेत्रों का विस्तार इसी असमान शहरी विकास का प्रत्यक्ष उदाहरण है (सिंह एवं मीणा, 2022)।

निम्न आय वर्ग पर अनियोजित शहरीकरण का प्रभाव सर्वाधिक गंभीर रूप में दिखाई देता है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग सीमित आय के कारण नगर के उन क्षेत्रों में निवास करने के लिए विवश होते हैं, जहाँ आधारभूत सुविधाओं का अभाव होता है। इन क्षेत्रों में स्वच्छता, जलापूर्ति, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं सुरक्षित आवास की स्थिति अत्यंत कमजोर रहती है। पर्यावरणीय प्रदूषण एवं अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों का प्रभाव इन समुदायों पर अधिक पड़ता है, जिससे उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति और अधिक कमजोर हो जाती है। इसके अतिरिक्त रोजगार की अनिश्चितता एवं जीवन यापन की बढ़ती लागत ने निम्न आय वर्ग की समस्याओं को और अधिक जटिल बना दिया है (राजस्थान आर्थिक समीक्षा, 2023)।

सार्वजनिक सुविधाओं पर बढ़ता दबाव भी अनियोजित शहरीकरण की महत्वपूर्ण परिणति है। नगर की जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में सड़क, परिवहन, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा संस्थान एवं जलापूर्ति जैसी सुविधाओं का विकास नहीं हो सका है। परिणामस्वरूप नागरिक सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित हो

रही है। नगर के अस्पतालों, विद्यालयों एवं सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था पर बढ़ते भार के कारण सुविधाओं की उपलब्धता एवं दक्षता में कमी आई है। यातायात जाम एवं पार्किंग संकट जैसी समस्याएँ नगरीय प्रशासन के लिए चुनौती बन चुकी हैं (भारत की जनगणना, 2011)।

पर्यावरणीय अवनयन का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बढ़ते प्रदूषण एवं संसाधनों की कमी के कारण स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि हुई है, जिससे परिवारों की आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। जल संकट एवं पर्यावरणीय अव्यवस्था के कारण छोटे उद्योगों एवं व्यवसायों की कार्यक्षमता भी प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त शहरी अव्यवस्था एवं प्रदूषण निवेश एवं पर्यटन गतिविधियों के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। नगर की पर्यावरणीय गुणवत्ता में गिरावट दीर्घकालीन आर्थिक विकास की संभावनाओं को भी सीमित कर सकती है (यादव, 2022)।

दौसा शहर की नगरीय जीवन शैली में भी अनियोजित शहरीकरण के कारण उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलते हैं। पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं एवं सामुदायिक संबंधों की जगह प्रतिस्पर्धात्मक एवं उपभोक्तावादी जीवन शैली का प्रभाव बढ़ा है। बढ़ती व्यस्तता, संसाधनों का दबाव एवं पर्यावरणीय समस्याएँ नगरीय जीवन को तनावपूर्ण बना रही हैं। हरित क्षेत्रों एवं सार्वजनिक स्थलों में कमी के कारण सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के अवसर भी सीमित हुए हैं। इस प्रकार शहरीकरण ने नगर की सामाजिक संरचना एवं जीवन शैली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि दौसा शहर में तीव्र एवं अनियोजित शहरीकरण ने नगर के पर्यावरणीय, सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। नगरीकरण की प्रक्रिया जहाँ विकास एवं आधुनिक सुविधाओं के विस्तार का प्रतीक मानी जाती है, वहीं दौसा शहर के संदर्भ में यह प्रक्रिया अनेक पर्यावरणीय चुनौतियों एवं संसाधन संकटों को भी जन्म देती दिखाई देती है। अध्ययन के विभिन्न पक्षों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया है कि नगर का विकास उसकी प्राकृतिक वहन क्षमता एवं आधारभूत संरचनाओं की सीमा से अधिक तीव्र गति से हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय संतुलन निरंतर प्रभावित हुआ है। दौसा शहर की भौगोलिक स्थिति, परिवहन संपर्क एवं प्रशासनिक महत्व ने इसे एक उभरते हुए नगरीय केंद्र के रूप में विकसित किया है। किंतु जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण-नगरीय प्रवास एवं आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के साथ समुचित नगर नियोजन एवं संसाधन प्रबंधन की प्रभावी व्यवस्था विकसित नहीं हो सकी। परिणामस्वरूप नगर में अनियंत्रित भूमि उपयोग परिवर्तन, कृषि भूमि का आवासीय एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में रूपांतरण तथा अवैध कॉलोनियों का विस्तार तेजी से बढ़ा। इस प्रक्रिया ने न केवल प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ाया, बल्कि नगरीय अव्यवस्था एवं पर्यावरणीय संकट को भी तीव्र किया (शर्मा एवं यादव, 2021)।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि दौसा शहर में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूजल स्तर में गिरावट तथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी समस्याएँ अनियोजित शहरीकरण की प्रत्यक्ष परिणति हैं। वाहनों की बढ़ती संख्या एवं अव्यवस्थित यातायात व्यवस्था ने वायु गुणवत्ता को प्रभावित किया है, जबकि अपर्याप्त सीवरेज एवं जल निकासी व्यवस्था ने जल प्रदूषण एवं जलभराव की समस्या को गंभीर बनाया है। इसी प्रकार भूजल का अत्यधिक दोहन एवं वर्षा जल पुनर्भरण की कमी भविष्य के जल संकट की ओर संकेत करती है। हरित क्षेत्रों में कमी एवं कंक्रीटीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव को बढ़ावा दिया है, जिससे स्थानीय जलवायु एवं पारिस्थितिकी प्रभावित हुई है (केंद्रीय भूजल बोर्ड, 2021)। सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी अनियोजित शहरीकरण के प्रभाव अत्यंत व्यापक एवं जटिल हैं। पर्यावरणीय अवनयन का प्रभाव विशेष रूप से निम्न आय वर्ग एवं कमजोर समुदायों पर अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्वच्छ जल, स्वास्थ्य सेवाओं एवं आधारभूत सुविधाओं की कमी ने जीवन स्तर को प्रभावित किया है। प्रदूषण एवं संसाधनों की कमी के कारण स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि हुई है, जिससे आर्थिक असमानता और अधिक गहरी हुई है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक सुविधाओं पर बढ़ते दबाव एवं नगरीय अव्यवस्था ने सामाजिक जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित किया है (जैन, 2020)।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि दौसा शहर में पर्यावरणीय समस्याएँ केवल प्राकृतिक कारणों का परिणाम नहीं हैं, बल्कि वे मुख्यतः मानवीय हस्तक्षेप एवं अव्यवस्थित विकास नीतियों से उत्पन्न हुई हैं। भूमि उपयोग परिवर्तन, प्रशासनिक योजनाओं की कमी, पर्यावरणीय नियमों के

अपर्याप्त क्रियान्वयन तथा जनसंख्या दबाव ने मिलकर वर्तमान संकट को और अधिक जटिल बनाया है। यदि वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में जल संकट, प्रदूषण, तापमान वृद्धि एवं संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ और अधिक गंभीर रूप धारण कर सकती हैं। इस संदर्भ में सतत शहरी विकास की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। अध्ययन यह संकेत करता है कि दौसा शहर के संतुलित विकास हेतु वैज्ञानिक नगर नियोजन, भूमि उपयोग नियंत्रण, हरित क्षेत्रों का संरक्षण, वर्षा जल संचयन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन एवं सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में सुधार जैसे उपायों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय जागरूकता एवं नागरिक सहभागिता को भी विकास प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। स्थानीय प्रशासन, नगर नियोजकों एवं नागरिक समाज के समन्वित प्रयासों के माध्यम से ही नगर के पर्यावरणीय संतुलन एवं जीवन गुणवत्ता को सुरक्षित रखा जा सकता है (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, 2022)।

संदर्भ सूची

अग्रवाल, आर. (2020). *भारत में नगरीय विकास और पर्यावरणीय चुनौतियाँ.* नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।

भारत की जनगणना. (2011). *राजस्थान जनगणना पुस्तिका.* नई दिल्ली: भारत सरकार।

भारत प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड. (2022). *राजस्थान के नगरीय क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रतिवेदन.* नई दिल्ली: पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय।

भारत सरकार. (2021). *नगर विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन रिपोर्ट.* नई दिल्ली: आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय।

भारत सरकार. (2022). *स्वच्छ भारत मिशन: शहरी प्रगति प्रतिवेदन.* नई दिल्ली: आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय।

भारत मौसम विज्ञान विभाग. (2022). *राजस्थान की वार्षिक जलवायु रिपोर्ट.* नई दिल्ली: पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय।

केंद्रीय भूजल बोर्ड. (2021). *राजस्थान में भूजल स्तर एवं जल संसाधन स्थिति रिपोर्ट.* जयपुर: जल शक्ति मंत्रालय।

चौधरी, पी. (2019). *पर्यावरण भूगोल.* जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

जैन, ए. (2019). "मध्यम आकार के नगरों में शहरी विस्तार की समस्याएँ." *भारतीय भूगोल समीक्षा,* 45(2), 112–126।

जैन, ए. (2020). *नगरीय पर्यावरण एवं सतत विकास.* नई दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी।

जैन, ए., एवं अग्रवाल, एस. (2021). "राजस्थान के नगरों में आर्थिक विकास एवं पर्यावरणीय प्रभाव." *राजस्थान आर्थिक अध्ययन पत्रिका,* 18(1), 56–72।

मिश्र, एस. (2018). *भारत में शहरीकरण: प्रवृत्तियाँ एवं समस्याएँ.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

मीणा, आर., एवं चौधरी, डी. (2021). "हरित क्षेत्रों में कमी एवं नगरीय पारिस्थितिकी पर प्रभाव." *पर्यावरण संरक्षण जर्नल,* 12(3), 44–59।

मीणा, आर., एवं चौधरी, डी. (2022). *हरित विकास एवं पर्यावरण संरक्षण.* जयपुर: पिंकसिटी प्रकाशन।

राजस्थान आर्थिक समीक्षा. (2023). *राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2022–23.* जयपुर: वित्त विभाग, राजस्थान सरकार।

राजस्थान नगर विकास प्रतिवेदन. (2022). *राजस्थान के नगरों में आधारभूत संरचना एवं विकास रिपोर्ट.* जयपुर: नगर विकास विभाग।

शर्मा, डी. (2019). "भूमि उपयोग परिवर्तन एवं नगरीय विस्तार का अध्ययन." *भौगोलिक दृष्टिकोण,* 14(1), 78–91।

शर्मा, डी. (2021). *नगरीय पर्यावरणीय समस्याएँ और समाधान.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

शर्मा, डी., एवं गुप्ता, वी. (2020). "अनियोजित शहरीकरण और आवासीय संकट." *भारतीय समाज एवं विकास पत्रिका,* 9(2), 88–104।

शर्मा, डी., एवं जैन, ए. (2021). "सतत शहरी विकास की अवधारणा और भारतीय नगर." *समकालीन भूगोल अध्ययन,* 11(4), 95–110।

शर्मा, पी., एवं सिंह, आर. (2020). *राजस्थान में नगरीकरण एवं पर्यावरणीय परिवर्तन.* जयपुर: राजस्थान अध्ययन केंद्र।

सिंह, आर. (2019). "ग्रामीण-नगरीय प्रवास और शहरी समस्याएँ." *भारतीय जनसंख्या अध्ययन,* 27(3), 66–81।

सिंह, आर. (2020). *राजस्थान का क्षेत्रीय भूगोल.* जयपुर: साहित्यागार प्रकाशन।

सिंह, आर., एवं यादव, एम. (2020). "यातायात दबाव एवं वायु प्रदूषण का नगरीय अध्ययन." *पर्यावरण एवं समाज,* 7(1), 33–49।

सिंह, वी., एवं मीणा, के. (2022). "सामाजिक असमानता एवं नगरीय विकास की चुनौतियाँ." *भारतीय सामाजिक शोध पत्रिका,* 15(2), 120–136।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम. (2022). *सतत विकास लक्ष्य और शहरी भारत.* नई दिल्ली: यूएनडीपी भारत।

यादव, एम. (2021). "भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं शहरी पर्यावरणीय संकट." *भारतीय भूगोल जर्नल,* 31(2), 52–69।

यादव, एम. (2022). *सतत नगरीय विकास और पर्यावरण प्रबंधन.* नई दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स।

यादव, एम., एवं मीणा, आर. (2022). "भूमि उपयोग परिवर्तन एवं पर्यावरणीय प्रभाव: राजस्थान का अध्ययन." *भूगोल एवं विकास समीक्षा,* 20(1), 101–118।

Cite this Article:

जितेन्द्र कुमार वर्मा[1], डॉ. शारदा[2],"दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण और पर्यावरणीय समस्याएँ: एक भौगोलिक मूल्यांकन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.89–99, Volume-05, Issue-02, July-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

जितेन्द्र कुमार वर्मा[1], डॉ. शारदा[2]

For publication of Research Paper title

दौसा शहर में अनियोजित शहरीकरण और पर्यावरणीय समस्याएँ: एक भौगोलिक मूल्यांकन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.10